**अन्नपूर्णा स्तोत्रम्**

**नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी**

**निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।**

**प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी**

**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१॥**

**नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी**

**मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी ।**

**काश्मीरागरुवासिताङ्गरुचिरे काशीपुराधीश्वरी**

**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥२॥**

**योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी**

**चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।**

**सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी**

**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥३॥**

**कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी**

**कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी ।**

**मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी**

**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥४॥**

**दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी**

**लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।**

**श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी**

**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥५॥**

**उर्वीसर्वजनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी**

**वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।**

**सर्वानन्दकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी**

**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥६॥**

**आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी**

**काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी ।**

**कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी**

**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥७॥**

**देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी**

**वामं स्वादुपयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।**

**भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी**

**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥८॥**

**चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी**

**चन्द्रार्काग्निसमानकुन्तलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।**

**मालापुस्तकपाशासाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी**

**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥९॥**

**क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी**

**साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी ।**

**दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी**

**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१०॥**

**अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।**

**ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥११॥**